thearyasamaj.org

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org
वर्ष-7 अंक 9, मास अगस्त-सितम्बर 2014 विक्रमी संवत् 2071
दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853115, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री, आचार्य अंकित शास्त्री

आर्य समाज राजेन्द्र नगर का प्रगति गीत

गीत रचना - स्वामी प्रकाश आनन्द

दयानन्द के बाग का पौधा, आर्य समाज, राजेन्द्र नगर..
आओ गाएँ इसकी गाथा, मिल के कर दें इसे अमर...

बंटवारे की पीड़ा ले कर, आए थे कुछ लोग यहां ...
अपना अपना दर्द था सबका, भटके सारे यहां-वहां...
धीरे धीरे संधर्षों ने, उन सब को एक शक्ति दी...
आओ मिलकर यज्ञ करें सब, ईश्वर ने वो भक्ति दी...
साप्ताहिक, फिर दैनिक देखो, होने लगे हवन घर-घर...
दयानन्द के.....

सन् अड़तालीस की दीवाली, सलवान स्कूल में था सत्संग...
भीड़, हौंसला, जोश देखकर, हर कोई हो गया था दंग...
सन् बावन में आर्य समाज को, मंदिर के लिए मिली जमीन...
ये सौभाग्य है इस समाज के., पदाधिकारी रहे प्रवीण...
धीरे-धीरे भवन बना फिर, हौले-हौले चला सफर...
दयानन्द के.....

इक-इक पैसा कर के इकठ्ठा, भवनों का निर्माण हुआ...
पूरी दिल्ली में समाज यह, सबसे आलीशान हुआ...
सिद्धान्तों की रक्षा की और, बहुत किया फिर वेद प्रचार...
नर सेवा-नारायण सेवा, यह सेवा का बना आधार...
कल तक जो इक पौधा था वो, आज हो गया बड़ा शजर...
दयानन्द के.....

हिन्दी, गोरक्षा आन्दोलन, चाहे हो शुद्धि का काम...
सब से आगे, सब से पहले, इसी समाज का रहता नाम...
चाहे कुदरत का कहर हो, या गरीब का कन्यादान...
छुआ-छुत मिटाने के लिए, दूर-दूर तक हुआ प्रयाण...
वृद्धाश्रम निर्माण किया जहां, वृद्धों का हो गुजर-बसर...
दयानन्द के.....

सुख में दुख में, साथ रहें सब, इक दूजे के आएँ काम...
पूरे जोश से आगे बढ़ कर, पहले करें समाज का काम...
स्त्री समाज की महिलाओं ने, सदा किया सब से सहयोग...
अतिथि, साधु, सन्यासी को, सदा परोसा सात्विक भोज...
सच्चे मन से सेवा करतीं, नहीं छोड़ती कोई कसर...
दयानन्द के.....

उच्च कोटि के सन्यासीगण, और पुरोहित रहे विद्वान...
जिनके कारण इस समाज को, मिलता रहा सदा सम्मान...
आर्य कुमार और बाल सुधार सभा, आर्य वीर दल शिविर लगे...
पदाधिकारी सदा ही सक्षम, जब चाहा हर बार मिले...
बडे- बडे यज्ञों का देखो, आज भी दीख रहा है असर...
दयानन्द के.....

शिक्षा के क्षेत्र में आगे, छात्रवृत्तियों की भरमार...
वैदिक साहित्य का प्रकाशन, आर्य समाज का किया प्रचार...
कन्या गुरुकुल, महिला आश्रम, अन्ध-विद्यालय, कक्षा योग...
होम्योपैथी, ऐलोपैथी, एक्युप्रैशर रहे न रोग...
रक्त परीक्षण, फिजियोथरैपी, स्वस्थ रहें सब नारी-नर...
दयानन्द के.....

आओ मिलकर भविष्य देखें, हर कोई दे हमें आशीष...
कैसा होगा यह समाज तब, जब आएँ दो हजार बीस...
सारे भवन हो वातानुकूलित, गतिविधियों की हो भरमार...
घर-घर गूंजे वेद की वाणी, अंकित हो सूक्तों का सार...
हर दिल में हो गूंज हमेशा, ओ३म् ही ओ३म् बस आए नजर...
दयानन्द के.....

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

स्वाध्याय और सत्संग

– डॉ. सुदर्शन देव आचार्य

स्वाध्याय और सत्संग मनुष्य जीवन के दो निर्माता हैं। महापुरुष बनाने का मुख्य श्रेय इन दोनों आयोजनों को जाता है। ज्ञान प्राप्ति का आधार यूं तो प्रत्यक्ष अवलोकन एवं पूर्व संस्कार भी कहे जा सकते हैं, किन्तु स्वाध्याय एवं सत्संग श्रवण और दर्शन (चिन्तन) का प्रयोजन पूरा करते हैं। किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिये साक्षात्कार चतुष्ट्य को जानना और अनुष्ठान करना आवश्यक होता है। श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार, चतुष्टय में श्रवण और मनन क्रमशः सत्संग और स्वाध्याय ही हैं। सत्संग और स्वाध्याय कि बिना निदिध्यासन और साक्षात्कार कभी सम्भव ही नहीं हो सकता। सत्संग और स्वाध्याय ही यह निर्धारित करते हैं कि हमें क्या करना है? कैसे रहना है? किसे पाना है?

अतः जीवन के उच्च लक्ष्य को पाने के लिये प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में स्वाध्याय और सत्संग की व्यवस्था अवश्य बनाकर रखनी चाहिये। यह कार्य यदि उत्तम संस्थायें करती हैं तो उसका लाभ वहां से ले लेना चाहिये। गुरुकुल इसके लिये बहुत ही सुन्दर स्थान कहे जा सकते हैं। स्वाध्याय का मुख्यरूप से सार्थकता तभी होती है, जब वेद का अध्ययन करते हैं। ये कहा है –

आधयो व्याधयो चैव द्वयोः दुःखस्य कारणम्।
तन्निवृत्तःसुखं विद्यात् तत्क्षयो मोक्ष उच्यते।।

आधि (मानसिक) और व्याधि (शारीरिक) दुःख के कारण हैं, इनकी निवृत्ति स्वाध्याय और सत्संग के द्वारा होती है। अतः प्रतिवर्ष श्रावणी से लेकर चार मास पर्यन्त कुछ अधिक समय सब कामों से निवृत्त होकर ऋषि तर्पण कार्य स्वाध्याय और सत्संग की परम्परा में सभी श्रद्धालु जनों को अपना समय अवश्य लगाना चाहिये। पुरातन काल से ऋषि तर्पण एवं आत्म अर्पण का कार्यक्रम चला आ रहा है। इसी स्वाध्याय से ही देवता सामने आ जाते हैं अर्थात् उनका तत्वज्ञान प्राप्त होता है। सब देवों का देव परमेश्वर भी स्वाध्याय से ही प्राप्त होते हैं। **"स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशतें"**। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि का तत्वबोध स्वाध्याय द्वारा होता है। वर्णाश्रम के कर्तव्य का बोध स्वाध्याय द्वारा होता है।

आइये! श्रावणी पर्व के अवसर पर ऋषि को चुकाकर ऋषि तर्पण और परस्पर एक दूसरे का मित्रवत् रक्षा करने का पर्व "रक्षाबन्धन" एवं शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति करने हेतु वैदिक सत्संग के आयोजनों में श्रद्धा, भक्ति, शुभ संकल्पों के साथ अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर विशेष लाभों से लाभान्वित होवें।

स्वामी दयानन्द हमें वेदों से जोड़ते हैं क्यों?

स्वामी दयानन्द की विशेषता बताते हुए हमारे विद्वान् कहते हैं "संसार में अनेक महापुरूष, देवी–देवता अपनी अपनी विशेष पहचान रखते हैं, जिनसे उन्हें पहचाना जाता है, कोई बांसुरी रखता है, कोई शंख, कोई वीणा आदि परन्तु स्वामी दयानन्द को किसी विशेष बात से पहचाना जाता है तो वेद से पहचाना जाता है।" स्वामी जी ने हम सबको भी वेद से जुड़ने का आदेश दिया। स्वामी जी का वर्तमान युग में यह नया काम अवश्य था, परन्तु प्राचीन ऋषियों को देखें तो यह कार्य अत्यन्त पुराना है, उतना ही पुराना जितना पुराना मनुष्य है।

महान् वैयाकरण पतंजलि ऋषि कहते हैं – जो मनुष्य विद्वान् और ब्राह्मण बनना चाहता है, उसे कर्तव्य समझकर वेद का अध्ययन करना चाहिये। केवल वेदों का अध्ययन ही नहीं करना चाहिये अपितु वेदांगों के साथ अध्ययन कर उनके अर्थों को भी जानना चाहिये। यहां पर वेदाध्ययन के लिये एक शब्द प्रयुक्त हुआ है "निष्कारणो धर्मः" सांसारिक प्रयोजनों के लिये सभी लोग नाना प्रकार की विद्यायें पढ़ते हैं परन्तु वेद पढ़ने से यदि कोई सांसारिक लाभ सिद्ध नहीं होता तो भी वेदाध्ययन सर्वोपरि मानकर उसका अध्ययन करना ब्राह्मण के जीवन का उद्देश्य बताया है।

आचार्य आपस्तम्ब ने वेदाध्ययन पर बल देते हुए कहा है "मनुष्य यदि आजीविका उपार्जन में लगता है, तो उसका वेदाध्ययन छूट जाता है, यदि वेदाध्ययन में लगता है तो आजीविका छूट जाती है, ऐसी परिस्थिति में मनुष्य क्या करें? तब ऋषि कहते हैं– बुद्धिमान् मनुष्य को योग्य है कि वह समर्थ है तो दोनों कार्य को करे, यदि दोनों में से केवल एक का चुनाव करना पड़े तो वेदाध्ययन को ही महत्व देना उचित है।

एक अच्छा डॉक्टर, एक अच्छा इंजीनीयर बनना उसके तकनीकी ज्ञान व योग्यता पर निर्भर करता है, परन्तु मनुष्य बनना वेद के ज्ञान पर निर्भर करता है।

संसार के सारे कला कौशल मनुष्य को अर्थोपार्जन के योग्य बनाते हैं परन्तु वेद का ज्ञान मनुष्य को समाजोपयोगी बनाते हैं।

एक मनुष्य का विद्वान् बनाना आवश्यक है, परन्तु धार्मिक बनाना भी उतना ही आवश्यक है। मनुष्य केवल विद्वान् बनकर स्वार्थी और धूर्त बन जाता है। वह बुद्धि का उपयोग स्वार्थ के लिये करता है। केवल धार्मिक व्यक्ति ज्ञान के अभाव में मूर्ख बन जाता है। अतः स्वामी जी मनुष्य को विद्वान् और धार्मिक बनाने की बात करते हैं।

वेद पढ़कर आचार्य अपने विद्यार्थी को जो उपदेश देता है, वह संसार का सर्वोच्च और सर्वोत्तम उपदेश है।

अन्य शिक्षाओं से वेद की शिक्षा में जो अन्तर है, वह है आज की पाश्चात्य शिक्षा का, जो मनुष्य को मजदूर बनाती है, हम महंगे मजदूर बनकर सन्तुष्ट हो जाते

thearyasamaj.org

हैं, वेद, स्वामी बनाने की बात करता है। जो निर्देश पर कार्य करता है, उसे कितना भी धन मिले वह मजदूर ही रहता है। जो औचित्य से कार्य करता है वह स्वामी होता है। मनुष्य विचारवान् होकर भी स्वामी बनता है। हम तकनीक सीखकर धन अधिक से अधिक कमा सकते हैं परन्तु विचारवान् नहीं बन सकते हैं, विचारवान् बनने के लिये वेदशास्त्र, दर्शन, व्याकरण पढ़ना होगा। भाषा हमें विचार करने की क्षमता देती है और शास्त्र विचार करने की दिशा देते हैं।

संसार में मनुष्य के पास उसकी दो चीजें हैं, एक उसका शरीर दूसरी आत्मा। हमें शरीर के विषय में सोचना तो सीखाया जाता है परन्तु आत्मा के विषय में सोचना हम नहीं जानते क्योंकि इसके विषय में हमें कोई नहीं बताता। वेद दोनों के विषय में बताता है। हमारे ऋषियो ने मनुष्य के जीवन में वेदों को महत्व दिया। स्वामी जी ने हमको वेद से उसी प्रकार जोड़ा है, जैसे मनु आदि ऋषियों ने बताया था।

प्रातःकाल कोई व्यक्ति उठता है तो वेद मन्त्रों का पाठ करते हुए उठता है स्नान करता है तो मन्त्र पढ़ता है, सन्ध्या-हवन करता है तो मन्त्र पढ़ता है, भोजन करता है तो मन्त्र पढ़ता है। अपने कार्यों को करता है तो तदुपयोगी मन्त्र पढ़ता है। रात्रि को शयन करता है तो वेद मन्त्रों का पाठकर सोता है। प्रातःकाल से सायंकाल तक किये जाने वाले कार्यों में वेद मन्त्र रचने का कोई अभिप्राय तो होना चाहिये। क्या व्यर्थ ही किसी को इस जाल में उलझा दिया गया है? प्रत्येक समय किये जाने वाले कार्य में भी श्रेष्ठता प्रतिपादन करने वाले मन्त्र उस कार्य के समय पढ़े जाते हैं। भोजन करने वाला व्यक्ति जो मन्त्र पढ़ता है उसमें वह कहता है कि अन्न प्रभु का दिया हुआ है, जैसे वह मेरे जीवन के लिये आवश्यक है उसी प्रकार सब प्राणियों के जीवन के लिये आवश्यक है। मुझे अपना भोजन करते हुए दूसरों की भोजन की भी चिन्ता करनी चाहिये। मैं भोजन करूं यह स्वार्थ है, व्यक्तिगत है, सबको भोजन मिले यह धर्म है, परोपकार है। इसी कारण हम अपने प्रत्येक कार्य से वेद को जोड़ते हैं जिससे वह कार्य सामान्य कार्य नहीं होकर उत्कृष्ट कार्य हो सके।

वेद हमारी वैचारिक सम्पत्ति है, अन्य सम्पत्ति के नष्ट होने पर, खोने पर वह प्राप्त की जा सकती है परन्तु ज्ञान की सम्पत्ति का पाना दुर्लभ है। हजारों लाखों वर्षों से मनीषियों ने जिस ज्ञान-विज्ञान की खोज की है, उसका आधार वेद है। अतः उसकी प्राप्ति और सुरक्षा वेद से ही सम्भव है।

CLOCK OF LIFE

As a child, when I wept and slept,
Time slowly crept.
As a youth when I
laughed and talked,
Time walked.
As I become a full grown man
Time ran
The clock of Time is wound but once.
No one can tell when
No one can tell when hands will stop.
If you hard work to do-
Do it now.
Place no faith in tomorrow.
To-day, the skies are clear and blue.
Tomorrow the clouds
will mar your view.
If you have a song to sing,
sing it now-
If you have kind words to say-
Say them now.
Tomorrow may not come your way.
Loved ones will not always stay.
The "present" is your own.
Live, Love, Toil now with a will.
For tomorrow,
the clock may then be still,

- Sudarshan Rai

Let us put a "Full-stop" and move ahead.

First of all, what is the importance of a "full-stop" while writing something , one opens up a new sentence only after putting a "full-stop" and as a rule, the new sentence starts with a capital letter. Similarly, after closing the previous chapter of life, one should start afresh with fresh vigour and determination and wove head. There is no use brooding over the part, as no one can go back and get hold of lost opportunities.

It is high time, we in our sixties, seventies-even eighties made a solemn promise to forget all the past grievances and complaints. This is achieved by Adopting a more generaus attitude of forgineness not only to others but to ourselves too, and then move ahead in life. By this, one is not doing any favour to others, but actually ensures a peace of mind, which then radiates the same to others. "Full-stop" in not the end but the beginning Future is not known, therefore the best course is to make the best of the present: the bonus years allotted to us and to count our blessings and thank Him whole heartedly.

- Sudarshan Rai

thearyasamaj.org

शंका और समाधान

– स्व. अभयदेव दर्शनाचार्य

प्रश्न . शौच किसे कहते हैं?

उत्तर . आन्तरिक मन तथा वाह्य महान, वस्त्र आदि की शुद्धि करना ही शौच कहलाता है।

प्रश्न . मन शुद्धि कैसे होगी?

उत्तर . स्वाध्याय, ईश्वर का चिन्तन व धर्म का पालन करने से मन राग द्वेष से रहित व शान्ति से भरा रहता है। मनुस्मृति नामक ग्रन्थ में कहा है मनः सत्येन शुद्धयति–अर्थात् सत्याचरण से मन शुद्ध होता है। मन तथा सत्याचरण दोनों एक दूसरे के आश्रित हैं। मन की शुद्धि से सत्याचरण होता है तथा सत्याचरण से मन शुद्ध होता है।

प्रश्न. सन्तोष का पालन कैसे होगा?

उत्तर . इच्छाओं को कम करने से सन्तोष का पालन होता है। इच्छाओं का कोई अन्त नहीं है, जिसकी इच्छायें जितनी न्यून होती है वह उतना ही अधिक सुखी व सन्तुष्ट होता है और असन्तोषी मनुष्य धन धान्य से परिपूर्ण होने पर भी सदा दुःखी रहता है।

प्रश्न . तप किसे कहते हैं?

उत्तर . सर्दी गर्मी, भूख–प्यास, हानि–लाभ, मन–अपमान का सहन करना ही तप कहलाता है। यदि किसी विशेष प्रयोजन, विद्या की प्राप्ति, धर्म प्रचार व देश की सेवा इत्यादि के लिये सर्दी–गर्मी आदि का सहन करें तो वह तप होगा, परन्तु बिना पयोजन ही गर्मी आदि में कष्ट सहन करना तप नहीं है।

प्रश्न . तप से क्या लाभ है?

उत्तर . योगदर्शन द्वितीय पाद में लिखा है **कायेन्द्रियसिद्धिर शुद्धिक्षयात्तपसः** अर्थात् तप का अनुष्ठान करने से शरीर बलवान् सर्दी गर्मी आदि को सहन करने में समर्थ और रोग रहित हो जाता है तथा चक्षु आदि इन्द्रियां भी निपुण हो जाती है।

प्रश्न . स्वाध्याय करने से क्या लाभ होता ?

उत्तर . स्वाध्यायशील मनुष्य के लिये पुस्तक अच्छा मित्र है। ज्ञान को शुद्ध व उत्कृष्ट बनाने के लिये स्वाध्याय आवश्यक है। पुस्तकें सदा बुरे कर्मों से हटाकर शुभ कर्मों की ओर प्रेरित करती हैं, इसलिए प्रत्येक दिन नियमित रूप से स्वाध्याय करते रहना चाहिये।

प्रश्न . ईश्वर प्रणिधान का क्या तात्पर्य है?

उत्तर . ईश्वर की भक्ति करना तथा प्रत्येक कर्म ईश्वर को साक्षी मानना और निष्काम कर्म करना ही ईश्वर प्रणिधान है।

प्रश्न . क्या शीर्षासन, पद्मासन, व सिद्धासन आदि को करना ही क्या योग है?

उत्तर . ये आसन योग के अंग है सम्पूर्ण योग नहीं। योग के आठ अंग हैं उनमें एक आसन भी है। आसनों के द्वारा शरीर स्वस्थ व रोग रहित होता है परन्तु योंग के साथ उनका सम्बन्ध बहुत की कम है।

प्रश्न . प्राणायाम करने से क्या लाभ होता है?

उत्तर . प्राणायाम करने से मन एकाग्र होता है। बिना प्राणायाम किये किसी भी मनुष्य का मन एकाग्र नहीं हो सकता है। प्राणों को रोकना ही प्राणायाम हैं। प्राणों को रोकने से मन भी रूक जाता है और मन के स्थिर होने से इन्द्रियां भी स्थिर हो जाती है। अतः प्रत्येक दिन न्यून से न्यून 8 से 90 प्राणायाम जरूर करने चाहिये।

प्रश्न . 30 प्रत्याहार किसे कहते हैं?

उत्तर . ध्यान का अभ्यास करते हुये नेत्र को बन्द कर लेते हैं, परन्तु श्रोत्र, नासिका के द्वारा बाह्य शब्द व गन्ध की अनुभूति होती रहती है लेकिन मन के एकाग्र होने से चक्षु आदि इन्द्रिय का रूप आदि विषयों से सम्बन्ध कट जाता है, इसी को प्रत्याहार कहते हैं।

प्रश्न . धारणा किसे कहते हैं?

उत्तर . "देशबन्धश्चित्तस्य धारणा" अर्थात् अपने मन को नासिका के अग्र भाग तथा हृदय आदि स्थान विशेष में मन को विचार मात्र से स्थिर करना धारणा कहलाती है। यह भी मन को स्थिर करने का उपाय है।

प्रश्न . ध्यान किसे कहते हैं?

उत्तर . ध्यै चिन्तायाम् धातु से ध्यान शब्द बना है। ध्यान का अर्थ होता है चिन्तन करना। यदि नेत्र को बन्द करके ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का चिन्तन करते हैं तथा मध्य में कोई अन्य विचार नहीं आता है तो उसी को ध्यान कहते हैं।

प्रश्न . समाधि किसे कहते हैं?

उत्तर . योग दर्शन तृतीय पाद के तृतीय सूत्र में लिखा है – **तदेवार्थमात्रनिर्भासं स्वरुपशून्यमिव समाधि** – अर्थात् जब लम्बे काल तक ध्यान का अभ्यास करते करते ईश्वर का साक्षात्कार हो जावे और ईश्वर के न्याय, दया, पक्षपातरहितता, राग द्वेष का अभाव आदि गुण योगी में आ जाये तो उसी को समाधि कहते हैं। ध्यान ही लम्बे अभ्यास के बाद समाधि बन जाता है।

प्रश्न . कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर . प्रवृत्तिर्वागबुद्धिशरीराम्भः न्याय अ. 9, आ.9 सूत्र–17, अर्थात शरीर, मन व वाणी के द्वारा चेष्टा विशेष करना ही कर्म कहलाता है।

प्रश्न : कर्म के कितने भेद हैं– (क) शुभ (ख) अशुभ (ग) मिश्रित व निष्काम।

(क) शुभ – जिन कर्मों का अन्तिम परिणाम स्वयं, समाज व राष्ट्र के लिये सुखदायी हो वे शुभ कर्म हैं, जैसे दान देना सत्य बोलना, ईश्वर भक्ति करना इत्यादि।

(ख) अशुभ कर्म : जिन कर्मों का अन्तिम परिणाम बुरा ही होता है उसे अशुभ कर्म कहते हैं जैसे चोरी, मिथ्या भाषण आदि।

(ग) मिश्रित – जो कर्म पाप व पुण्य दोनों से युक्त होते हैं वे मिश्रित कर्म कहाते हैं जैसे कि कृषि का कर्म। कृषि में अनेक कीडे मर जाते हैं इसलिये यह पाप से युक्त है तथा कृषि के द्वारा अनेक लोगों का भरण पोषण होता है इसलिये यह पाप युक्त तथा हजारों लोगों की रक्षा भी होती है, अतः युद्ध पुण्य से युक्त भी है तथा दोनों से युक्त होने के कारण युद्ध मिश्रित कर्म है।

(घ) निष्काम कर्म – निष्काम कर्म केवल योगी ही कर सकता है। जिस कर्म को करते हुए धन, सम्मान व पुत्र इन तीनों की इच्छा नहीं की जाती है वे निष्काम कर्म कहाते हैं।

thearyasamaj.org

ओ३म् का महत्त्व

– आनन्द सभरवाल – लाजपत नगर

ओ३म् के जाप से होता है आत्मिक एवं शारीरिक लाभ।

ओ३म् केवल एक पवित्र ध्वनि ही नहीं, अपितु अनंत शक्ति का प्रतीक है। ओ३म् अर्थात् ओ३म्। तीन अक्षरों से बना है जो सर्व विदित है अ उ म्, "अ" का अर्थ है आविर्भाव या उत्पन्न होना "उ" का तात्पर्य है उठना, उड़ना अर्थात बिकास "म्" का मतलब है मौन हो जाना अर्थात् ब्रह्मलीन हो जाना, ओ३म् सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड की उत्पत्ति और पूरी सृष्टि का द्योतक है ओ३म् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का प्रदायक है। ओ३म् का जप कर कई साधकों ने अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर ली। शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख कर एक हजार बार ओ३म् रूपी मंत्र का जाप करने से वर्तमान और भविष्य दोनों ही जीवन लक्ष्य की और अग्रसर होते है।

ओ३म् उच्चारण की विधि :–

1. प्रातः उठकर पवित्र होकर ओंकार ध्वानि का उच्चारण करें। 2. ओ३म् उच्चारण पदमासन अर्ध पदमासन सुखासन, वज्रासन में बैठकर इसका उच्चारण 11, 21, 51, 108 1008, कितनी ही बार अपने समयअनुसार कर सकते हैं, जाप या जप माला भी गिन सकते हैं। 3. ओ३म् जोर से बोल सकते हैं धीरे धीरे भी बोल सकते हैं।

ओ३म् के उच्चारण से शारीरिक लाभ : 1. अनेक बार ओ३म् का उच्चारण करने से पूरा शरीर तनाव रहित हो जाता है। 2. अगर आपको घबराहट या अधीरता होती है, तो ओ३म् का उच्चारण करें। 3. यह शरीर के विषैले तत्वों को दूर करता है अर्थात् तनाव के कारण पैदा होनें वाले तत्त्वों पर नियंत्रण करता है। 4. यह हृदय और खून के प्रवाह को संतुलित रखता है। 5. इससे पाचन शक्ति तेज होती है। 6. इससे शरीर में फिर से युवावस्था वाली स्फूर्ति का संचार होता है। 7. थकान से बचने के लिए इससे उत्तम उपाय कुछ और नहीं। 8. नींद न आने की समस्या इससे कुछ ही समय में दूर हो जाती है रात को सोते समय नींद आने तक मन में ओ३म् का जप करने से निश्चित नींद आयेगी। 9. कुछ विशेष प्राणायाम के साथ इसे करने से फेफड़ों में मजबूती आती है।

10. ओ३म् के पहले शब्द का उच्चारण करने से कंपन पैदा होती है। इन कंपन से रीड की हड्डी प्रभावित होती है और इसकी क्षमता बढ़ जाती है। 11. ओ३म् के दूसरे शब्द का उच्चारण करने से गले में कंपन पैदा होती है। जो कि थायरायड ग्रंथी पर प्रभाव डालता है। जैन सिख बौद्ध और हिन्दुत्व मान्य सभी धर्मों में ओ३म् का विशेष महत्व है। जब कभी भी आप कोई काम न कर रहे हों या यात्रा कर रहे हों या मन परेशान है। चित को शांति करने की कोशिश करते हुए इस अलौकिक पवित्र अक्षर ओ३म् का मन में उच्चारण करते रहें और देखें जीवन में चमत्कार। इस अक्षर के उचारण से आपके आसपास धनात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। नकारात्मक अर्जा बीमारी दुःख, चिंता नष्ट हो कर आपका जीवन स्वर्ग बन जाता है।

मित्रों इसे जीवन में अवश्य अपनायें।

–: प्रार्थना :–

वह शक्ति हमें दो कृपानिधे!
कर्त्तव्य मार्ग पर डट जायें।
पर सेवा पर उपकार करें हम,
निज जीवन सफल बना जायें।।
अति दीन दुखी निरबल उनके,
सेवक बनकर संताप हरें।
जो हैं अटके भूले भटके,
उनको तारें खुद तर जायें।।
छल, द्वेष, कपट, पाखण्ड, झूठ,
अन्याय से निशदिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना,
शुचि प्रेम सुधा रस बरसावें।।
जिन आन मान मर्यादा का,
प्रभु ध्यान रहे सम्मान रहे।
जिस देश, जाति में जन्म लिया,
बलिदान उसी पर हो जावें।।

हिन्दी की वेदना

– चतर सिंह नागर

रात को मेरे सपने में हिन्दी आयी।
लेकिन मैने उसके माथे पर
बिन्दी नहीं पायी।।
मैंने विस्मय से इसका कारण पूछा।
लेकिन उसको कोई उत्तर नहीं सूझा,
बल्कि मुझसे ही उलटा प्रश्न पूछा,
कल मेरा जन्म दिवस मनाओगे?
बड़े–बड़े बैनर, पोस्टर,
इश्तहार छपवाओगे?
सजे हुए मंच से मेरा गुणगान करोगे?
फिर साल भर तक मुझे फाइलों में बन्द रखोगे!

मैं खुश हुयी थी कि 16वीं वर्ष गांठ पर मैं जवान हो जाऊंगी।
संविधान की धारा 342 (2) के तहत
26 जनवरी 1965 को मेरी शादी हो जायेगी!
मैं भी अन्य गृहणियों की तरह भारत के युवा वर्ग पर राज करुंगी।
राजभाषा होने से सभी बहनों का मान रखूंगी।

काश मेरा सपना पूरा हो पाता!
मैं भारत की वास्तविक राष्ट्रभाषा
बन पाती!
अब मैं 68 वर्ष की हो गयी हूं।
बचपन से बुढ़ापा आ गया है,
लेकिन मेरा सौभाग्य कहीं खो गया है।

चूड़ी, बिन्दी, सुहाग सब छूट गये हैं।
क्योंकि मेरे अपने ही मुझसे रूठ गये हैं।
मुझे घर से निकाल कर चौराहे पर शर्मसार किया गया है
और वर्ष में एक दिन मेरा दिवस
मनाया जाता है
मैं हर दिन की हकदार थी,
हर दिल की पैरोकार थी।
लेकिन मैं अब वनवास भोग रहीं हूँ।
अपनी अन्तर्व्यथा पर रो रही हूं।
इस उम्मीद के साथ कि काश कोई आयेगा।
मुझे मेरा खोया हुआ मान लौटायेगा।

हिन्दी के माथे पर बिन्दी सजाएगा।
संयुक्त राष्ट्र में सम्मान दिलायेगा।
काश कोई आएगा!

thearyasamaj.org

गाय के पंचगव्य में छिपा है स्वास्थ्य और सेहत का राज

–वैद्य भानुप्रकाश शास्त्री

वेदों और पुराणों में गाय को मां का दर्जा यूं ही नहीं दिया गया है। चरक जैसे आयुर्वेदाचार्य ने गाय को हर रोग का उपचार करने में सक्षम माना है। चरक संहिता में पंचगव्य यानी गाय का दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर से कई रोगों के इलाज के बारे में मजबूती देता है। वही गोबर व गोमूत्र शरीर के शुद्धिकरण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

दूध के हैं ढेरों फायदे –

यह ऐसे रसायन का काम करता है जो प्रतिरोधक क्षमता बढाने के साथ-साथ शरीर को ताकतवर बनाता है।

छह महीने से 10 साल की उम्र तक के बच्चों को गाय का दूध पिलाने से वे सक्रिय रहते हैं और उनका वजन नहीं बढ़ता। भैंस के दूध की बजाय गाय का दूध बच्चों के शरीरिक और मानसिक विकास के लिए अच्छा होता है।

गाय के दूध में कैरोटिन होता है जो हड्डियों और मांसपेशियों का विकास करता है।

गर्भवती महिलाओं को कब्ज की समस्या रहती है इसलिए गाय का दूध उनके लिए भी लाभकारी होता है। दूध सुपाच्य एवं हल्का होने के साथ-साथ यह पाचन में भी सहायता करता है।

गाय के दूध में पाए जाने वाले तत्व जैसे साइटोकिंस रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं।

गोबर है बेहद लाभकारी –

गोबर शरीर में विद्यमान गंदगी को बाहर निकालता है। अगर शरीर में दाद, खुजली या अन्य कोई त्वचा की समस्या हो तो गोबर लेप करके उसकी चिकित्सा की जाती है।

त्वचा में अगर गांठे या दानें हो रहे हों तो गोबर को गांठ पर आधा घंटे लगाया जाता है। 15-20 दिनों में यह समस्या कम होती है।

पेट के कीड़े नष्ट करने के लिए गोबर का रस 2-3 चम्मच कुछ दिन लगातार दिया जाये।

गोमूत्र है शुद्धि का जरिया –

यह विषैले पदार्थों को निकालकर शरीर की सफाई करता है। सूती कपड़े में 7-8 बार छने गोमूत्र को खाली पेट लिया जाये।

डकारें आने और जी मिचलाने में भी गोमूत्र लिया जा सकता है। इसके अलावा यह कब्ज, हृदय रोग, डायबिटीज और मोटापा कम करने में भी सहायक है।

सोराइसिस (स्किन प्रॉब्लम) होने पर गोमूत्र से स्नान किया जाये तथा त्वचा पर उसे लगाया जाता है।

घी के फायदे अनेक–

गाय के घी के कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम रहती है इसलिए इससे वजन नहीं बढ़ता। सर्दी जुकाम व पेट की समस्या होने पर गाय का घी प्रयोग करने से लाभ होता है। दो से तीन चम्मच गाय का घी गर्म करें। इसमें एक चुटकी काली मिर्च का चूर्ण मिला लें। इसे रोटी के साथ खाएं। जुकाम में राहत मिलेगी।

आयुर्वेद में गाय के घी से नेत्र रोगों का भी इलाज किया जाता है। आंखों में जलन हो तो गाय के घी को काजल की तरह लगाना चाहिए।

पैरों के तलवों में जलन होने पर गाय के घी से मालिश करने पर जलन खत्म हो जाती है।

दही है गुणकारी –

गाय के दूध से बना खाने से पाचन तंत्र ठीक रहता है और शरीर में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम होती है।

इसमें खाना पचाने वाले जीवाणु होते हैं तो भूख बढ़ाते हैं।

दस्त होने पर दही खाने से आराम मिलता है।

गाय के दूध से बने दही पर कई शोध हो चुके हैं उन सबके अनुसार कई गंभीर रोगों को मिटाने में दही लाभकारी सिद्ध हुआ है।

देने में है प्रसन्नता

एक बार एक विद्वान उपदेशक एक सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा में 100 के लगभग श्रोता उपस्थित थे। उस समय वे प्रसन्नता से बोल रहे थे, तभी अचानक उपदेशक चुप हो गये और सभी को एक गुब्बारा देते हुए बोले, "आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।" जब सभी ने अपने नाम लिख लिये तो उपदेशक ने सभी गुब्बारे इकठ्ठा किए और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी श्रोताओं से पांच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते उस कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी । पांच मिनट बीत गये लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूँढ पाया। अब उपदेशक ने धैर्य और शांतिपूर्वक जिस व्यक्ति जिसके नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अंदर हर व्यक्ति के हाथ में उसका गुब्बारा था। विद्वान उपदेशक ने कहा, बिल्कुल ऐसा ही हमारे जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बेचैनी से घूम रहा है जबकि यही नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहाँ? प्रसन्नता दूसरों से झीना झपटी करने से नहीं, दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए, आपको खुद को प्रसन्नता मिल जायेगी। ढूँढ़ने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही हमारे जीवन का उद्देश्य है।" वहां आए श्रोताओं के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

–अर्जुनदेव चड्ढ़ा

thearyasamaj.org

ईश्वर का सच्चा स्वरूप

–नारायण दास, प्रयासी

आप कहेंगे कि ईश्वर का झूठा स्वरूप भी होता है क्या? हां होता है और प्रचार उसी का है। इसलिए इस विषय की और भी आवश्यकता है। सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे।

क्लेशकर्म विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।। –योग.

अर्थात् जो अविद्यादि क्लेश, कुशल, अकुशल, इष्ट, अनिष्ट और मिश्र फलदायक कर्मों की वासना से रहित है वह सब जीवों से विशेष ईश्वर कहता है। "ईश ऐश्वर्ये" इस धातु से ईश्वर शब्द सिद्ध होता है। जिस का सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम "ईश्वर" है। यहां ईश्वर से अभिप्राय जगत के रचयिता, नियन्ता तथा प्रलयकर्ता परमात्मा से है।

ईश्वर को न मानने वाले प्रायः यह कहा करते हैं कि यदि ईश्वर नाम की कोई वस्तु है तो हमको उसका साक्षात् दर्शन कराओ, बिना देखे हम उसको नहीं मानेंगे। उन लोगों को कदाचित यह विदित नहीं कि संसार में सभी वस्तुओं का प्रत्यक्ष नहीं हुआ करता। ऐसी बहुत सी वस्तुयें है जिनका इन्द्रियों से प्रत्यक्ष नहीं होता परन्तु उनको मानना पड़ता है। अन्धे को दुनिया नहीं दिखाई देती परन्तु क्या यह कहा जा सकता है कि दुनिया नहीं है? बुद्धिपूर्वक विचारने से अन्धे को भी दुनिया की सत्ता स्वीकार करनी पड़ती है। शास्त्र में कहा है कि :–

"प्रत्यक्षं ह्यल्पमनल्पमप्रत्यक्षमस्ति यदागमानुमान–युक्तिभिरुपलभ्यते तत्सत्यं यैः तावदिन्द्रियैः प्रत्यक्षमुपलभ्यते तान्येव सन्ति चाप्रत्यक्षाणि।।" चरकसंहिता।

अर्थात् संसार में प्रत्यक्ष (दिखाई देने वाला) बहुत कम है और अप्रत्यक्ष (ना दिखाई देने वाला) बहुत अधिक है। जो वस्तु आगम, अनुमान तथा युक्ति से सिद्ध हो, उसे सत्य समझना चाहिये। जिन इन्द्रियों से यह विषयों का प्रत्यक्ष करते हैं वह इन्द्रियां ही स्वयं अप्रत्यक्ष हैं अर्थात् दिखाई नहीं देतीं।

वस्तु के विद्यमान होते हुए भी उसका प्रत्यक्ष न होने में आठ हेतु शास्त्रकारों ने बतायें हैं –

"ततां च रुपाणामतिसन्निकर्षाददिति विप्रकर्षदि–वरणात्करणदैवि त्यान्मनोऽनवस्थानत्समान आमिहारादभिवादतिसौक्ष्म्याचप्रत्यक्षा नुपलबिधं –चरकसहिस्ता

अर्थात् अत्यन्त समीप होने, अत्यन्त दूर होने, ढका हुआ होने, इन्द्रियों के दुर्बल होने मन का ध्यान उधर न होने, समान आकार वाले पदार्थों में मिल जाने, किसी शक्तिशाली पदार्थ से दब जाने तथा अत्यन्त सूक्षम होने के कारण पदार्थों के होते हुए भी उनका साक्षात् नहीं होता। किसी पुस्तक में छपे अक्षरों को हम आंख से कुछ दूरी पर रखकर ही पढ़ सकते हैं परन्तु यदि पुस्तक को आंख से लगाकर पढ़े तो नहीं पढ़ सकेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि किसी पदार्थ के अत्यन्त सामीप्त होने के कारण भी उसका साक्षात् नहीं होता।

किसी वस्तु के अत्यन्त दूर होने के कारण उसका साक्षात नहीं होता, इस बात को प्राप्त सभी जानते हैं। दिल्ली में बैठे हुए हम बम्बई को नहीं देख सकते क्योंकि वह हमारी आंख से अत्यन्त दूर अर्थात् हमारी चक्षु इन्द्रिय की पहुंच से बाहर है।

किसी पदार्थ के ढ़का हुआ होने के कारण भी उसका साक्षात् नहीं होता। जैसे मान लो किसी मनुष्य की जेब में सौ रूपये का नोट पड़ा हुआ है परन्तु कपड़े से ढका हुआ है इसलिये हमें उसका प्रत्यक्ष नहीं होता।

इन्द्रिय के दुर्बल होने के कारण भी किसी वस्तु का साक्षात् नहीं होता। यदि दृष्टिशक्ति नष्ट हो गई है तो वस्तु सामने होती भी नहीं दिखाई देती। यदि मन चक्षु इन्द्रिय के साथ सयुंक्त न हो तो भी किसी वस्तु का साक्षात् नहीं होगा चाहे वह वस्तु आंख के सामने ही क्यों न रखी हुई हो।

बहुत से समान आकार वाले पदार्थों में यदि कोई पदार्थ मिला दिया जावे तो भी उसका साक्षत नहीं होगा जैसे कोई श्वेतवर्ण की गाय यदि बहुत सी समान वर्ण की गायों में सम्मिलित कर दी जावें तो उसका पहचानना कठिन होगा क्योंकि सब गाय देखने में एक जैसी हैं। किसी अधिक शक्तिशाली पदार्थ से दब जाने के कारण भी वस्तु का साक्षात् नहीं होता जैसे मध्याहन में जब सूर्य पूरी तेजी के साथ चमक रहा हो उस समय यदि बिजली गिरे तो बिजली का प्रत्यक्ष नहीं होगा क्योंकि बिजली की चमक सूर्य की प्रबल चमक से दब कर रह गई।

किसी पदार्थ के अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण भी उसका साक्षात् नहीं होता।

इसलिये यह कहना जब तक किसी चीज का प्रत्यक्ष नहीं होगा उसको नहीं मानेंगे अज्ञानता की बात है।

परमात्मा चूंकि अत्यन्त समीप और अत्यन्त सूक्ष्म है इसलिए उसका साक्षात् नहीं होता।

स्वामी दयानन्द सरस्वमी ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में कहा है:–

"और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है।" और भी लिखा है कि "जिस पुरुष के समाधि योग से अविद्यादि मल नष्ट हो गये हैं आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित्त जिस ने लगाया है, उसको जो परमात्मा के योग का सुख होता है वह वाणी से कहा नहीं जा सकता क्योंकि उस आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तः करण से ग्रहण करता है" परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला, तो बाकी का मजमून आपकी सेवा में पेश करने का प्रयास करुंगा। तब तक के लिये आज्ञा चाहता हूँ।

पता पता उसका पता दे रहा है
कौन कहता है वो लापता है।
हर गुल में शजर में हर शै में,
हर बशर में।
गर तू न देखे उसको तो है
कसूर तेरा।

thearyasamaj.org

प्रकाशमय जीवन

–महात्मा ओम मुनि

सौर वर्ष के बारह मास प्रसिद्ध तैतीस देवताओं में से बारह आदित्य देवता कहलाते हैं। ये बारह आदित्य देवता क्यों कहलाते हैं? ये बारह आदित्य देवता इसलिए कहलाते हैं क्योंकि पृथिवी एक सौर वर्ष (365.25 दिन) में सूर्य का एक चक्र अर्थात् एक परिक्रमा पूरी करती है। इससे सूर्य (आदित्य) ही हमें आकाश में एक गोलाकार परिधि (चक्र) में घूमता हुआ प्रतीत होता है। जिस मार्ग पर सूर्य घूमता हुआ दृष्टिगोचर होता है, वह मार्ग ज्योतिमण्डल या राशिचक्र कहलाता है। खगोलशास्त्रियों द्वारा राशिचक्र के बारह भाग किये गये हैं। राशिचक्र से बाहर आकाश में दीखने वाले बारह नक्षत्रसमूहों की आकृति विभिन्न प्राणियों के नाम मीन, मेष, वृषभ, मिथुन व कर्क आदि रखे गये हैं।

सूर्य एक राशि में जितने दिनों तक रहता है उसे एक मास कहते हैं। जैसे सूर्य जब तक मीन राशि में रहता है, तब तक चैत्र सौर मास रहता है और जब इस राशि से संक्रान्त करके सूर्य दूसरी राशि मेष में प्रवेश करता है तब दूसरा मास वैशाख अर्थात् दूसरा आदित्य कहलाता है। इसी प्रकार एक के बाद एक बारह आदित्य कहलाते हैं। इसी प्रकार एक के बाद एक बारह आदित्य कहलाते हैं।

सौर वर्ष के बारह मास बारह आदित्य जोकि चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ व आषाढ़ आदि अन्तरिक्ष में स्थित अठाईस नक्षत्रों पर आधारित नाम अपना एक विशेष अर्थ रखते हैं। पवित्र सामवेद में एक मन्त्र है–

तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे।
आदित्यासः समहसः कृणोतन।।365।।

अर्थात्–हे परमेश्वर की शक्तियो! हे प्रकाशयुक्त सूर्यकिरणो! हे ज्ञान से प्रकाशित आदित्य ब्रह्मचारियो! आप हमारे और पुत्र व पौत्रों के जीवन के लिए दीर्घ आयु प्रदान करें तथा उसके उपाय बतायें।

इस मन्त्र में उपासक द्वारा परमात्मा से आदित्यों इन मास के नामों के अनुसार क्रमशः अपने जीवन में अन्धकार, अविद्या व अशुचिता आदि को दूर भगाकर प्रकाश, तेजस्विता, विद्या एवं सूचिता भरने की प्रार्थना की गई है। मन्त्र में, "आदित्यासः समहसः कृणोतनः, कहकर बारह आदित्यों से प्रार्थना की गई है। पूर्व कथन के अनुसार सूर्य की बारह संक्रान्तियाँ बारह आदित्य कहलाती हैं और इन अलग–अलग राशियों से सूर्य की किरणों का पृथिवी के जीवों पर भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है। नक्षत्रों के नाम पर आधारित बारह मासों (आदित्यों) से हम निम्न प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं–

1. वैशाख (विशाखा नक्षत्र) हम संसार रूपी वृक्ष की "विशाखा" अर्थात् विशिष्ट शाखा हैं, सर्वोत्तम भाग हैं, क्योंकि हमारा जीवन श्रेष्ठ संकल्पों पर आधारित है।
2. ज्येष्ठ (ज्येष्ठा नक्षत्र) हमारा श्रेष्ठ संकल्प ही हमें श्रेष्ठ व ज्येष्ठ बनायेगा। अतः हम सदैव श्रेष्ठ व ज्येष्ठ बने रहने का प्रयत्न करेंगे।
3. आषाढ़ (पूर्वाषाढ़ नक्षत्र) हमारे ज्येष्ठ बनने का अभिप्राय है– "आषाढ़" अर्थात् हमें काम–क्रोधादि शत्रुओं से पराजित नहीं होना बल्कि उन्हें अपने वश में करना है।
4. श्रावण (श्रवण नक्षत्र) काम–क्रोधादि पर विजय प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि हम उत्तम विद्वानों, ऋषि–मुनियों व सच्चे साधु–संन्यासियों के पवित्र उपदेश एवं वेद–शास्त्रों आदि आर्ष ग्रन्थों के पावन ज्ञानोपदेशों का श्रद्धापूर्वक श्रवण व मनन करें।
5. भाद्रपद (भद्रपद नक्षत्र) क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान मार्ग पर चलना ही कल्याणकारी, स्वस्ति पंथा है अर्थात् श्रेयमार्ग है।
6. आश्विन (अश्विनी नक्षत्र) इसी कल्याणकारी मार्ग पर चलने के लिए हमें श्वःश्वः अर्थात् कल–कल की प्रार्थना नहीं करनी है, बल्कि–
7. कार्तिक (कृत्तिका नक्षत्र) काम–क्रोधा आदि शत्रुओं का अभी से छेदन प्रारम्भ कर देना है।
8. मार्गशीर्ष (मृगशिरा नक्षत्र) इन अज्ञान, अविद्या व काम–क्रोधादि शत्रुओं को ढूंढ–ढूंढ कर इनका विनाश करना है और हमें "मृग शिरस्" अर्थात् ढूंढने वालों का मुखिया बनना है।
9. पौष (पुष्य नक्षत्र) हम इन शत्रुओं को नष्ट करके अपने शरीर व आत्मा को पुष्ट करेंगे, शक्तिशाली बनायेंगे।
10. माघ (मघा नक्षत्र) हमारी आत्मा और शरीर के पोषण और पुष्टि से हमारे जीवन में "मा–अघ" अर्थात् पाप का लवलेश मात्र भी नहीं रहेगा और हम निर्मलता व पवित्रता के ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जायेंगे।
11. फाल्गुन (उ. फाल्गुन नक्षत्र) उसके पश्चात् हमें संसार का ये विषय–वासनाओं का ऐश्वर्य "फाल्गुनी" फोका अर्थात् नीरस होने लगेगा और–
12. चैत्र (चित्रा नक्षत्र) हमारे जीवन में "चित्रा" अर्थात् आश्चर्यजनक परिवर्तन के साथ हमारा जीवन उत्तम ज्ञान व सोम पान से प्रकाशमय व तेजस्विता से भर उठेगा।

अतः आओ हम सभी बारह मासों के स्वस्ति पथ का अनुगमन करें ताकि– **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्। के मार्ग को प्रशस्त करते हुए– असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।** के लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

thearyasamaj.org

'आस्था और अन्धविश्वास'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आजकल आस्था शब्द का प्रयोग इसके वास्तविक अर्थों में न करके इस शब्द को स्वार्थ सिद्धि और अपनी कमियों व अज्ञान को छुपाने में प्रयोग किया जा रहा है। आस्था का अर्थ क्या है? जब हम इस शब्द पर विचार करते हैं तो इसका अर्थ होता है कि हम जिस बात को मानते व करते हैं उसका हमें पूरा ज्ञान है। उसे हम तर्क, प्रमाण, युक्ति एवं बड़े-बड़े विद्वानों के वाक्यों व कथनों से पुष्ट व सिद्ध कर सकते हैं। आस्था के विरूद्ध यदि कोई वाद-विवाद होता है तो हम विषय से भागते नहीं, हटते नहीं, उल-जलूल दलीलें नहीं देते अपितु विरोधी तर्कों व आरोपों का इस प्रकार से उत्तर देतें हैं कि जैसे कक्षा में विद्यार्थी के प्रश्नों का उत्तर गुरूजी या अध्यापक देते हैं। ऐसा ही प्रश्नोपनिषद के ऋषि व सत्यार्थ प्रकाश में प्रश्नों को उपस्थित कर महर्षि दयानन्द ने समाधान किये हैं, इन्होंने आस्था के नाम पर प्रश्नों को टाला नहीं अपितु उनके सयुक्तिक उत्तर दिए। अब हम आस्था के बारे में उदाहरण देकर उसका वास्तविक व वर्तमान विकृत स्वरूप दोनों को प्रस्तुत करते हैं। **ईश्वर की यदि हम चर्चा करें तो यह सिद्ध होता है कि इस संसार को बनाने, चलाने व अन्त में इसका विनाश व प्रलय करने वाली शक्ति का नाम ईश्वर है।** सृष्टि की रचना का कार्य अपौरूषेय सत्ता द्वारा ही सम्भव है, न तो यह सृष्टि स्वयं बन सकती है और न संसार के सब मनुष्य इस सम्पूर्ण सृष्टि को एक साथ मिलकर बना सकते हैं। सृष्टि को बनाने की बात तो क्या, इसके एक-एक अवयव अर्थात् जल, वायु या अग्नि वा ऐसे अन्य किसी व कन्हीं पदार्थों को ही बना सकते हैं। सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व ब्रह्माण्ड में स्थित लोक-लोकान्तरों को बनाना तो संसार की सारी जन-संख्या के लिए भी असम्भव है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि हमारा शरीर व इसकी सभी इन्द्रियां, यन्त्र व उपकरण भी उसी अपौरूषेय शक्ति ईश्वर के द्वारा बनाये गये हैं। वह शक्ति व सत्ता सर्वव्यापक, निराकार, अदृश्य व अति सूक्ष्म, सत्य, चेतन, आनन्द से परिपूर्ण, सर्वज्ञ आदि स्वाभाविक गुणों से युक्त व पूर्ण होनी सिद्ध होती है। ऐसा ही ईश्वर का स्वरूप चार वेदों, उपनिषद्, दर्शन ग्रन्थों व मनुस्मृति आदि में वर्णित है। अब ईश्वर की उपासना व पूजा की बात आती है। प्राचीन परम्परा के अनुसार उसकी उपासना योग विधि से एक आसन में स्थित होकर आत्मा व मन को उसमें लगा देने, उसके गुणों का ध्यान करने व गायत्री मन्त्र का अर्थ पूर्वक चिन्तन व विचार करके की जाती है या की जा सकती है। अन्य कोई प्रकार उसका नहीं है। परन्तु आजकल हम क्या देखते हैं कि अज्ञानी व स्वार्थी लोगों ने मध्यकाल में अनार्ष ग्रन्थ पुराणों की रचना करके लोगों को मूर्तिपूजा की आदत डाल दी। **अज्ञानी लोग शीघ्र ही अन्धविश्वासों का शिकार हो जाते हैं या उसमें फंस जाते हैं।** पहले तो राम, कृष्ण, विष्णु व शिव आदि कुछ इने-गिने महापुरूषों की ही पूजा-उपासना मूर्तिपूजा के द्वारा की जाती थी। परन्तु हम देखते हैं कि समय के साथ साथ लोगों का अज्ञान व स्वार्थों में वृद्धि होती गयी और इसी प्रकार भगवानों व इष्टदेवों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। **क्या मूर्ति पूजा करना सत्य व यथार्थ है? क्या ऐसा करने से ईश्वरोपासना से जो लाभ होते हैं वह मूर्तिपूजकों को भी होते हैं?** इस पर कोई विचार ही नहीं करता? यदि मूर्तिपूजा करने वाले यह कहें कि हमने सन्तान मांगी थी और मूर्ति पूजा या मन्नत मांगने से हमारी वह मन्नत पूरी हो गई, तो प्रश्न है कि कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस, जंगली जानवरों, सांप, बिच्छू आदि सभी की सन्तानें हो रही हैं तो क्या यह मूर्तिपूजा करते हैं? इसका मूर्ति पूजा करने वालों के पास कोई उत्तर नहीं है? यही हाल अन्य मन्नतों की पूर्ति का भी है। मूर्ति पूजा व गंगा स्नान आदि से जो मन्नतें हिन्दुओं की पूरी होती हैं, वहीं मान्यतायें ईसाई, मुसलमानों, बौद्ध व जैनियों की भी पूरी होती हैं जो कि हिन्दू देवी देवताओं को मानते ही नहीं हैं। इससे सिद्ध हो जाता है कि मूर्तिपूजा के बारे में जो दलीलें दी जाती हैं वह सब गलत हैं। इन गलत कृत्यों को आस्था का नाम देना बुद्धि का दिवाला निकालने के समान है। आस्था सच्चे सर्वव्यापक की वेदों व वेदसम्मत शास्त्रों के अनुसार धारणा व ध्यान द्वारा उपासना व पूजा करने को कहते हैं जिससे ईश्वर की सहायता प्राप्त होती है, ईश्वर व आत्मा का साक्षात्कार प्राप्त होता है, इस सच्ची उपासना में मनुष्य अपना जो समय व्यतीत करता है वह क्रियमाण कर्म, संचित कर्म, प्रारब्ध व इनसे मिलने वाले सुख व शान्ति के रूप में प्राप्त होते हैं। अतः इस विचार व चिन्तन से यह ज्ञात हुआ कि मूर्तिपूजा एवं अज्ञानता पूर्वक किये जाने वाले किसी भी कार्य को आस्था का नाम देना गलत व अविवेकपूर्ण कार्य है, इससे उद्देश्यों व इच्छाओं की पूर्ति व सिद्धि नहीं होती है।

आइये, अब थोड़ी चर्चा अन्धविश्वासों की भी कर लेते हैं। अन्धविश्वासों के सन्दर्भ में हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द के आविर्भाव तक किसी को पता ही नहीं था कि अन्धविश्वास नाम का भी कोई शब्द होता है। सभी सही व गलत कार्यों को जो धार्मिक दृष्टि से किये जाते थे, धर्म, मत या धार्मिक परम्पराओं जैसे नामों से जाने जाते थे। महर्षि दयानन्द ने सभी वेद विरूद्ध व अवैदिक कार्यों, परम्पराओं, ईश्वरोपासना के नाम पर मूर्तिपूजा व यज्ञों में पशुओं के मांस की आहुति, सतीप्रथा, फलित ज्योतिष, बेमेल विवाह, अवतारवाद व उनकी मूर्ति व अन्य सभी प्रकार से पूजा व उपासना आदि को अन्ध-विश्वास की संज्ञा दी। जिस प्रकार से विद्या व अविद्या, ज्ञान व अज्ञान शब्द हैं उसी प्रकार से विश्वास व अन्ध-विश्वास शब्द भी हैं। इसी प्रकार आस्था व अनास्था दो शब्द हैं। आस्था शब्द ज्ञान, विद्या, श्रद्धा व विश्वास के लिए प्रयोग में लाया जाता है और अनास्था, अन्धविश्वास, अज्ञान, अश्रद्धा व अविद्या के लिए प्रयोग में लाया है। ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है, इसमें उपासक व भक्त की आस्था का होना, सच्ची आस्था है व उसके विपरीत मूर्ति, किसी नदी, किसी मनुष्य व महापुरूष आदि में पूज्य व उपासना की बुद्धि व मानसिकता का होना अनास्था व अन्धी-श्रद्धा, अन्ध-विश्वास व अन्धी-आस्था कही जायेगी। अन्ध विश्वास व अनास्था या अन्धी-आस्था समानार्थक, एक दूसरे के पूरक व पर्यायवाची शब्द हैं। वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द ने संसार की सर्वांगीण उन्नति व कल्याण का एक सर्वोत्तम सिद्धान्त दिया है। **सिद्धान्त यह है कि अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।** इस सिद्धान्त को आस्था के सन्दर्भ में कहें तो *अनास्था,*

thearyasamaj.org

अन्धी-आस्था, अन्धविश्वासों का नाश करना चाहिये और सच्ची आस्था, सच्चे विश्वास, सच्ची श्रद्धा, सच्ची भक्ति व सच्ची उपासना की वृद्धि करनी चाहिये। हम समझते हैं कि इस सिद्धान्त से सारा देश व समाज अनभिज्ञ ही है। लोगों में अज्ञानता के जो संस्कार, अन्ध परम्पराओं का अभ्यास आदि हैं, वह इनसे उत्पन्न मूढ़ता के कारण, सकारात्मक कुछ उत्तम व सत्य मान्यताओं के बारे में सोच ही नहीं पाते हैं। इस अज्ञान, अन्धी आस्था व अन्धविश्वास के संस्कारों को तो सच्चा गुरू ही दूर कर सकता है जिनका हमारे समाज व देश में अभाव दिखाई देता है। आज धर्म व व्यवसाय दोनों एक दूसरे के पूरक व पर्याय बन कर काम कर रहें हैं। सबको अपनी-अपनी केवल आर्थिक उन्नति की चिन्ता है। धर्म-कर्म, सेवा, परोपकार आदि का स्थान प्राथमिक न होकर बहुत बाद में आता है **अतः अन्धविश्वास को दूर करना कठिन व कठिनतम् है।** महर्षि दयानन्द ने अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द जी के कहने पर व अपने विवेक व उत्कृष्ट ज्ञान के कारण यह कार्य किया। उनको मात्र 10 वर्ष का अल्प समय ही मिला जिसमें उन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया। **हम तो अनुभव करते हैं कि उन्होंने अपने विचारों से अपने समय में सारे संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति की। कोई भी मत, पन्थ, मजहब, सम्प्रदाय उनकी आध्यात्मिक वैचारिक क्रान्ति से बचा नहीं, सब पर उसका कुछ कम या अधिक सकारात्मक प्रभाव हुआ।** आज हमारे पौराणिक भाई जो पहले विदेश की यात्रा में पाप मानते थे तथा विदेश गये व्यक्ति को धर्म से च्युत कर देते थे, विधर्मी के हाथ का भोजन करने व जल पीने पर भी जिनका धर्म छूट जाता था, विधवा विवाह के विरोधी थे, एक ही जाति व समुदाय में विवाह के पक्षधर थे, आज सबने अपने इन कार्यों को छोड़ कर महर्षि दयानन्द के विचारों को स्वीकार कर लिया है। परन्तु बहुत से लोगों का मूर्तिपूजा एवं अन्य अन्ध-विश्वासों से जीवनयापन होता है, अतः वह आज भी यथावत् जारी है। यही स्थिति सभी मत-मतान्तरों में न्यूनाधिक है। **हमारे यूरोप के वैज्ञानिक तो इसी कारण से ईश्वर तक के अस्तित्व को अस्वीकार कर चुके हैं। उन्हें वेदों के आधार पर ईश्वर के स्वरूप व उपासना तथा वैदिक सिद्धान्तों को बताने वाला कोई है ही नहीं और न इस कार्य के लिए उनके पास समय है। ईश्वर व जीवात्मा के स्वरूप के बारे में जिज्ञासा करने व दुःखों से मुक्ति के उपायों पर विचार करने तक का समय भी उनके पास नहीं है। उनका सारा समय तो वैज्ञानिक कार्यों, खोजों या फिर जीवन को सुविधापूर्वक व्यतीत करने में ही व्यतीत होता है। ऐसा ही सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है।**

जब तक देश व समाज में अन्धी-विश्वास हैं, देश पूरी तरह से उन्नति नहीं कर सकता। सर्वांगीण उन्नति तभी कही जा सकती है कि जब अज्ञान, अन्धविश्वासों व झूठी आस्था, जिसे वर्तमान में आस्था का नाम दिया जा रहा है, का समूल अन्त हो। इसके लिए बच्चों व बड़ों को सोकर उठने व सोते समय इस वेद-भावना का पाठ करना चाहिये कि **"सत्य को ग्रहण करने व असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये, सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहियें। अविद्या, अज्ञान, अन्धाविश्वास, झूठी आस्था, अन्धी श्रद्धा का नाश करना चाहिये और विद्या, ज्ञान, सच्चे विश्वासों, सच्ची आस्था, व सच्ची श्रद्धा में वृद्धि करनी चाहिये।"** जब समाज व देश के सभी लोग वेदमन्त्रों के इन आशयों का विचार, चिन्तन व नियमित वाचन करेगें तभी देश की सच्ची उन्नति होगी। जब तक देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतकों मनुष्यों को सन्त आदि का नाम देकर उनसे इच्छाओं की पूर्ति, गुण-कर्म व स्वभाव का विचार किए बिना जन्म पर आधारित जाति-प्रथा, फलित ज्योतिष आदि विचार, मान्यतायें व व्यवहार जारी हैं, तब तक देश व समाज उन्नति नहीं कर सकते। खेद है कि आज के मत-मतान्तरों के अनुयायी व उनके गुरू महाराज इसको समाप्त करने के स्थान पर इन्हें पोषित कर रहे हैं। हमें यह भी अनुभव होता है कि आज के आधुनिक युग का एकमात्र प्रमुखतम् व सच्चा धर्मग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश व आर्याभिविनय सहित वेद, उपनिषद्, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति की शिक्षायें व मान्यतायें आदि ही हैं। इन्हीं से झूठी आस्था व अन्धविश्वास समाप्त होगें। इसी साथ हम अपनी लेखनी को विराम देते हैं।

जीवन से प्रेम

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा

जीवन की नियति है मृत्यु
ये परम सत्य है अपितु
हमारे हाथ में जीवन है
और उसे बचाने का ही मन है
इसी मन के कारण
तो प्रेम, मोह, करुणा और अपनापन है।
अंतिम सांस तक
जीना ही वीरता बंधु है
दवा, दुआ चाहे जीवन
की चाह में लांघना पड़े सिंधु है
मौत से लड़कर तय हारना,
फिर भी लड़ना यही सर्वोच्च बिंदु है।

मृत्यु की यही सबसे बड़ी सजा है
मृत्युन्जय को प्रसन्न कर लिया
जीवन का मजा है
कृष्ण का समझाकर कहना पड़ता है
शरीर का त्याग है मनुज
तुम्हारे लिए तो जीवन भांति-भांति
से सजा है
तुम्हारी इच्छा के आगे
कौन मार सकता है
दूसरा जन्म, पुनः जीवन,
देह का रथ सदा तुम्हारे लिए खड़ा है।

मृत्यु बार-बार आती है।
हर बार हार-हार जाती है
तुम्हारा तन हरती है और तुम्हारा मन
फिर किसी की गोद भरती है
तुम फिर आ जाते हो जीने
जीवन का अमृत पीने और पिलाने
तुम्हारा जीवन के प्रति नेह
मन धरता है नई-नई देह
जीवन से इतना प्रेम करो
सृष्टि को इतना सुखों से भरो
देने के लिए इतना मरो कि हर मृत्यु,
द्वार बन जाये जीवन का
हर जीवन में शोक हरो जन-जन का
यही तुम्हारा अमरत्व है
मृत्यु पर भी तुम्हारा प्रभुत्व है।
जीवन से प्रेम करना ही चाहिए
परपीड़ा नाशक बनने
के लिए जीवन तो चाहिए ही चाहिए।
इतना प्रेम करो जीवन से
तुम्हारा साथ देने आ जाये परमात्मा
और साथ जीवन जीते एक हो
जाये आत्मा-परमात्मा।
देह की नियति है मृत्यु
किन्तु तुम्हारी कहीं और
कभी नहीं है मृत्यु।

thearyasamaj.org

श्रावणी पर्व की सचित्र झलकियाँ

पूर्णाहुति के अवसर पर उपस्थित विद्वत् गण

ध्वज गीत गाती हुई माताएं

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी प्रवचन करते हुए

माता तारा ढींगरा जी एवं सुनीता सहगल जी छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए

श्री के.एल. गंजू जी छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए

श्री विकाश मैहता एवं अंकुर मैहता छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए

श्री अतुल सहगल जी एवं श्रीमती आदर्श जी छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए

आर्य परिवार के बच्चे छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए

thearyasamaj.org

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

ओ३म्

Date of Posting 12 & 13, at S.R.T. Nagar, Post Office, ND-55

क्रमशः श्री के.एल. गंजू जी (राजदूत कामरोस संघ), श्री सुशील सलवान जी, सभा को संबोधित करते हुये एवं आभार व्यक्त करते हुए प्रधान श्री अशोक सहगल जी।

श्रावणी पर्व उल्लास पूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली के भव्य प्रांगण में 13 अगस्त से 17 अगस्त तक श्रावणी पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रातःकालीन सत्र में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में अथर्ववेदीय बृहद्यज्ञ का आयोजन किया गया तथा सायंकालीन सत्र में आचार्य डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री जी के वेद मन्त्रों पर आधारित प्रवचन तथा अंकित शास्त्री जी के मधुर भजन हुए। श्रद्धालु आर्य जनता ने इन कार्यक्रमों का आनन्द उठाया। 17 अगस्त जन्माष्टमी के दिन यज्ञ की पूर्णाहूति के पश्चात् विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत "युवाओं के प्रेरणास्रोत योगेश्वर श्री कृष्ण" विषय पर वैदिक विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन हुए, जिनमें प्रमुख थे – डॉ. महेश विद्यालंकार जी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी, आचार्य देवेश प्रकाश जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी आदि थे।

इसके बाद विभिन्न आर्य संस्थाओं एवं गुरुकुलों से आए हुए लगभग 100 विद्यार्थियों में 1,50,000/– रुपयों छात्रवृत्ति के रूप में वितरण किया गया। मन्त्री श्री सतीश मैहता जी ने बताया कि श्री के.एल. गंजू जी द्वारा प्रदत्त राशि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले 10 छात्र–छात्राओं को दी जा रही है। इस वर्ष कार्यक्रम में विशेष उपलब्धि आर्य समाज राजेन्द्र नगर का प्रगति गीत रहा, जिसके सूत्रधार आदरणीय स्वामी प्रकाशानन्द जी रहे। समारोह के मुख्य अतिथि आर्यसमाज के विशेष सहयोगी श्री के.एल. गंजू जी (सपत्नीक राजदूत कामरोस संघ) थे जिन्होने सभी विद्यार्थिओं को आशीर्वाद दिया। विशेष आमन्त्रित सलवान एजुकेशनल ट्रस्ट के चैयरमेन श्री सुशील सलवान जी थे। उन्होंने कहा कि सलवान स्कूल में एक विशाल महायज्ञ हो, जिसमें आर्य समाज राजेन्द्र नगर के सभी लोग उत्साहित होकर भाग लें।

समारोह के समापन से पूर्व समाज के यशस्वी प्रधान श्री अशोक सहगल जी एवं कर्मठ मन्त्री श्री सतीश मैहता जी ने सभी विद्वानों , कार्यकर्ताओं एवं दानी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया।

आर्य समाज को मिला नया वाहन

माता तारावन्ती जी का धन्यवाद

दैनिक साप्ताहिक संत्सग में लाने–ले जाने हेतु माता तारावन्ती ढ़ींगरा एवं उनके परिवार की ओर से एक (ईको–वैन गाड़ी)आर्य समाज को दान स्वरूप भेंट दिया गया है। इसके माध्यम से अतिवृद्धजन एवं आने जाने में अक्षम सदस्यों को एवं यज्ञप्रेमी सज्जनों को सुविधा होगी। इस प्रकल्प के माध्यम से आर्य समाज में लोगों की उपस्थिति भी बढ़ेगी। हम आर्य समाज के सभी सदस्य माता तारा ढ़ींगरा जी एवं उनके परिवार के प्रति हार्दिक आभारी हैं। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह माता तारा ढ़ींगरा जी को उत्तम स्वास्थ एवं दीर्घायु प्रदान करे। उनका आशीर्वाद इसी प्रकार आर्य समाज को प्राप्त होता रहे। यज्ञ प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस वैन की सुविधा को प्राप्त करने के लिए 011–25760006 पर सम्पर्क करें।

–सतीश मैहता (मन्त्री)

Printed and published by **Sh. S.C. Mehta** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :*** **Dr. Kailash Chandra Shastri**